ए0 रामचन्द्रन की कला में अभिव्यंजनात्मक तत्वों का संयोजन

डॉ. पूजा गुप्ता
प्रोफेसर
शोध–निर्देशिका
नंदलाल बोस सुभारती कालेज ऑफ फाइन आर्ट्स एंड फैशन डिजाइन
स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ

दिलीप कुमार पटेल
शोधार्थी
नंदलाल बोस सुभारती कालेज ऑफ फाइन आर्ट्स एंड फैशन डिजाइन
स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ

सार

अभिव्यंजनावादी विचारधारा से प्रभावित कलाकारों एवं कलाकृतियों के विषय में बात करने से पहले अभिव्यंजना के विषय में जानना आवश्यक है। अभिव्यंजना का अर्थ है। कलाकार की अभिव्यक्ति व भावों को कलाकृति में उतारना। जिनमें कलाकार अनेक प्रतीकों के द्वारा अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं अपने मनोभावों को चित्रों के माध्यम से चित्रित कर आनंदित होते हैं। आज चित्रकला व्यक्तिवादी हो गई है पहले चित्रकार समाज तथा सामाजिक परिस्थितियों तथा समस्याओं को ध्यान में रखते हुए कलाकृतियों का सृजन करते थे परन्तु आज कलाकार समाज से स्वयं का नाता तोड़ अपनी व्यक्तिगत भावनाओं तथा बिन्दु के आधार पर कलाकृतियों को चित्रित करता है। उसका समाज तथा सामाजिक प्राणियों की रूचि अभिरूचि से कोई संबंध नहीं है। वह तो केवल वही बनाता है जो उसका मन करता है। रामचन्द्रन के जन्म स्थान की प्रकृति हरी–भरी थी। प्रकृति का अद्भुत सौन्दर्य उन्हें एक और आकर्षित करता था और दूसरी ओर दहला भी देता था। कोई जादुई जंगल जैसे घर के पीछे ही था। रामचन्द्रन के पिता एक छोटे जमीदार थे। बचपन से ही उनका माहौल चित्रकला के अनुकूल था। रामचन्द्रन स्वयं एक प्रतिभाशाली लेखक भी थे। युवावस्था में ही एक अलग नजरिए और असाधारण अंकन अक्षमता के कारण रामचन्द्रन की प्रतिभा को वरिष्ठ कलाकारों और कला समीक्षकों ने एक साथ सराहा और स्वीकार भी किया गया था। वह कम्युनिस्ट रूझान के थे और बंगाल में नक्सलवादी हिंसा के जख्म वह दिल्ली में रहकर भी महसूस कर रहे थे। उनके लघु चित्र एक सिनेमा की समझ पैदा कर रहे थे। रंग एक दूसरी दुनिया में ले जा रहे थे। न्यूक्लियर रागिनी के रूप में चित्रकला का उदास उजाड़ रूप सामने आ गया। इस प्रकार कलाकार की यात्रा एक अभिव्यक्ति वादी चित्रकार के रूप में प्रारंभ हुई उनके चित्रों में जानवरों व पक्षियों की आकृतियाँ जीवंत है।
कलाकार को अपने भीतर का सच मिल गया था। रंग मिल गए थे। रेखाएं तो शुरु से ही शक्तिशाली थी। कला दुनियाँ में अमूर्त कला का बोलबाला था। पर रामचन्द्रन आकृति मूलक काम कर रहे थे।

मुख्य शब्दः ए0 रामचन्द्रन, अभिव्यंजनावादी, तत्व, चित्रशैली, चित्रों की रंग योजना और अभिव्यंजना।

प्रस्तावना

ए0 रामचन्द्रन प्रकृति के अंतरंग अध्ययन के आधार पर एक कलाकार के रूप में विकसित हुए और पूर्वी और पश्चिमी दोनों परंपराओं का अध्ययन और समावेशन करके अपनी व्यक्तिगत शैली विकसित की। भारत के सबसे प्रतिष्ठित और विभिन्न कलाकारों में से एक ए0 रामचन्द्रन जिन्होंने पॉच दशकों से अधिक समय तक दृश्य भाषा के साथ निरंतर प्रयोग किया। उनकी कला विशिष्ट रूप से समकालीन और भारतीय दोनों प्रकार की थी। कलाकार ने विभिन्न तकनीकों और माध्यमों के प्रयोग के साथ–साथ रूप और छवियों के साथ एक निरंतर परिवर्तन किया है। राजस्थान के दूरस्थ आदिवासी गाँव की लगातार यात्रा और राजस्थान लघु परंपराओं के अध्ययन ने रामचन्द्रन की दृश्य भाषा को फिर से परिभाषित और सुधार किया था। भारतीय शास्त्रीय कला के कई पहलुओं को उनकी कला में एकीकृत किया गया है। जिसमें मिश्रित रूपांकन हो या कल्पना, सजावटी तत्वों के साथ–साथ रूप और रंगों की प्रचुरता शामिल है। साधारण आदिवासी लोक और प्राकृतिक परिदृश्य से उन्होंने राजस्थान को अपनी कला में जारी रखा है। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि राजस्थान और वहाँ रहने वाले कलाकार भी इस प्रदेश के रंगों का ऐसा प्रयोग न कर पाए हैं जैसा रामचन्द्रन ने किया। उनके कार्यों में नियोजित भारतीय शास्त्रीय कला को प्रतिमा में बुना गया है। यह एकीकृत पहलू उनकी आदमकद मूर्तियों में भी दृढ़ता से दिखाई देते थे जो वनस्पतियों और जीवों के रूपाकंन से भरपूर थे।

रामचन्द्रन ने अपनी लगभग सभी कलाकृतियों में चटक रंगों का प्रयोग अधिक किये थे। कुछ कलाकृतियों में स्त्री आकृतियों को तेज हरे रंग का बनाये थे। उनकी कृतियों में लाल, नीला, गुलाबी, जैसे चटक रंगों की प्रधानता थी। उनकी कलाकृतियों में कल्पना और अतियथार्थवाद का मिश्रण देखने को मिलता था। तथा अधिकांश कलाकृतियां प्रतीकात्मक है। रामचन्द्रन भारतीय कलाकारों में सबसे प्रसिद्ध जीवित कलाकार हैं। इस चित्रकार, संगीतकार, लेखक, शिक्षक और मूर्तिकार को पिछले कुछ वर्षों में कई सम्मान मिले, जो उनके अति सुन्दर म्यूरल आर्ट के कारण उन्हें मिले। जिसमें उन्होंने अपने जीवन का एक सुन्दर दृश्य प्रस्तुत किया है बचपन से लेकर आज तक उन्होंने जिस तरह का जीवन जिया जो घटनाएं उनके जीवन में घटी उससे उन्हें किस भावना का आभाष हुआ। वही अभिव्यक्ति उन्होंने अपनी कला में प्रस्तुत की।

इन चित्रों में रामचन्द्रन ने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों को आकृतियों द्वारा स्थापित किया है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे इन आकृतियों की प्रेरणा के पीछे विभिन्न घटनायें छिपी है। इन आकृतियों में मुद्राओं और हाव–भावों में उत्तेजना स्पष्ट झलकती है।

1935 में केरल में जन्मे, रामचन्द्रन ने केरल विश्वविद्यालय से साहित्य में स्नातकोत्तर और शान्तिनिकेतन से ललित कला में डिप्लोमा प्राप्त किया। ललित कला के क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदान के लिए उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्म–भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली द्वारा 'प्रोफेसर एमेरिटस' से भी सम्मानित किया गया था। रामचन्द्रन एक अनवरत प्रयोगकर्ता और बहुमुखी कलाकार रहे हैं। रेखाओं और रंगों पर उनकी महारत की पहचान बढ़ती जा रही है। इन वर्षों में, उनकी पेंटिंग्स ने एक शास्त्रीय स्मारकीयता हासिल कर ली है और उनके माध्यम और रंगों के उपयोग ने एक चमकदारता हालिस कर ली है। एक कलाकार के रूप में, वह केवल प्राकृतिक घटनाओं की दुनियां का प्रतिनिधित्व करने से संतुष्ट नहीं हैं जैसा कि मानव आँख देखती है। वह दृश्यमान वास्तविकता को एक व्यक्तिगत दर्शन, दुनियां की एक आदर्श दृष्टि को व्यक्त करने वाले ट्रॉप्स में बदल देता है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी कार्य को प्रभावशाली एवं सार्थक बनाने हेतु उस कार्य विशेष का उद्देश्य एवं संकल्प पर विशेष ध्यान देना चाहिये। इससे किया गया कार्य ज्यादा प्रभावशाली सिद्ध होता है। इस शोध पत्र को इसके पूर्णत्व तक पहुँचाने के लिये मैने मूलभूत सिद्धान्तों के आधार पर इसके उद्देश्यों को पूर्ण करने की चेष्टा की है। इस शोध पत्र का उद्देश्य मूलभूत सिद्धान्तों को पूर्ण करता हुआ कई चरणों को पार करता है एवं प्रत्येक चरण इस शोध पत्र की रचना के लक्ष्य को उजागर करता हुआ प्रतीत होता है। यदि शोध कार्य को आरम्भ करने से पहले ही हम इसके उद्देश्यों को ध्यान में रखते हैं तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुचा हूँ कि शोध कार्य अत्यन्त सन्तुष्टीप्रद एवं सुसंगठित बनकर तैयार होता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुऐ शोधार्थी विषय विशेष से सम्बन्धित अनेक समस्याओं एवं बाधाओं का अवलोकन करके, उनका अन्वेषण करके, उन समस्याओं एवं बाधाओं के निवारण हेतु विभिन्न मत प्रस्तुत करता है। शोधार्थी अपने इन्हीं तर्क–वितर्क एवं तथ्यों के आधार पर अपने शोध के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निरन्तर प्रयासरत रहता है। शोधार्थी के निरन्तर प्रयासों के द्वारा ही शोधकार्य को विषमता से सुगमता में परिवर्तित किया जा सकता है। इस तथ्य से मैं भली–भाँति परिचित हूँ एवं अपने शोध–पत्र ''ए0 रामचन्द्रन की कला में अभिव्यंजनात्मक तत्तों का संयोजन'' को उसके पूर्णता के परमतत्व तक पहुँचाने हेतु निरन्तर प्रयासरत रहने का संकल्प लिये मैं दृढ निश्चयी हूँ।

मैं अपने विद्यार्थी जीवन में इनकी कलात्मक विशेषताओं से बहुत प्रभावित रहा हूँ एवं मैने यह भी अनुभव किया है कि यदि हम ऐसे महान कलाकारों के कृतित्व का अनुसरण करें, उनकी कलात्मक प्रतिभा का विश्लेषण करें तो हमारी स्वयं के कार्यों पर भी बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ए0 रामचन्द्रन जी हैं जिन्होंने कला में विविध विषयों का चयन कर अपनी कलात्मक अभिव्यंजना को प्रस्तुत किया। जीवन में घटने वाली विभिन्न घटनाओं को इन्होंने अपनी कला में स्थान दिया। एक कलाकार के लिये रूप, रेखा, रंग पर कौशल स्थापित करना आवश्यक है इस तथ्य को भली–भाँति इन्होंने प्रस्तुत किया एवं आने वाली नई पीढ़ी कला जगत में स्थापित उसके मूल्यों को अनमोल समझ सके, इस तर्क को ध्यान में रखते हुऐ मैने ए0 रामचन्द्रन की कला अभिव्यंजना का विवरण देते हुऐ मर्म स्वष्ट करने का मन्तव्य रखा है। एक सामान्य व्यक्ति

का कला से क्या सम्बन्ध है यह तथा इस शोध प्रबन्ध में ए0 रामचन्द्रन की कला की अभिव्यंजनात्मकता का वर्णन करके स्पष्ट करने का प्रयास किया जायेगा।

शोधपत्र का साहित्यावलोकन

डॉ0 शुकदेव श्रोत्रिय, (2008)

प्रस्तुत ग्रन्थ में लेखक ने चित्रकला में प्रयोग होने वाले उपादानों एवं उनके प्रयोग की विस्तृत चर्चा की है। लेखक ने ग्रन्थ को पन्द्रह अध्यायों में विभाजित किया है। जो क्रमशः है। प्रथम अध्याय में इजल चित्रों के चित्रण एवं उनका भूमि बंधन, रंग पदार्थ एवं उनके तरल पदार्थ शुष्क रंग, पेन्सिल चारकोल इत्यादि, तैल चित्रण, टेम्परा चित्रण, एक्रेलिक चित्रण, जल रंग चित्रण, खास, पेस्ट चित्रण, भित्ति चित्र मिश्रित माध्यम, वाटिका इत्यादि की विस्तृत विवेचना की है।

रामचन्द्रनः ए रेट्रोस्पेक्टिव (I & II), प्रो0 आर0 शिवकुमार (2003)

ए0 रामचन्द्रन पर एक नई किताब उनके लम्बे, शानदार करियर में किए गए उनके काम को समग्रता मे प्रस्तुत करती है। प्रो0 आर0 शिव कुमार द्वारा लिखित, नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट (NGMA) और वढेरा आर्ट गैलरी द्वारा प्रकाशित दो खण्डों का एक सेट हैं जिसमें कलाकार के जीवन और कार्यों का अच्छी तरह से विश्लेषण किया गया, है। यह पुस्तक दुर्लभ, ऐतिहासिक तस्वीरों के चयन से समृद्ध है।

हमारे सबसे प्रतिष्ठित कलाकारों में से एक ए0 रामचन्द्रन ने 40 से अधिक वर्षों तक लगातार दृश्य भाषा के साथ प्रयोग किया है। पेन्टर, मूर्तिकार, ग्राफिक कलाकार और डिजाइनर, रामचन्द्रन की दृष्टि और शैली उदास अभिव्यक्तिवाद से प्रकृति के साथ आगे और आध्यात्मिक जुडाव में बदल गई है। इस प्रक्रिया में, कलाकार ने विविध पैमाने और माध्यमों की खोज की है। पुस्तक इन सभी बदलावों और कलाकार के करियर में मील के पत्थर का पता लगाती है।

चित्रकार ए0 रामचन्द्रन का दो खण्ड जीवन कला एक निश्चित संग्रहणीय है। शान्तिनिकेतन में अध्ययन करने वाले लेखक आर0 शिवकुमार वहां कला इतिहास के प्रोफेसर हैं। उन्होंने समकालीन कला पर कई मूल्यवान वृत्तचित्र लिखे हैं, और उन्होंने सिंगापुर कला संग्रहालय के लिए स्वतन्त्रता के बाद की भारतीय कला पर एक शो का सह–संचालन भी किया है।

यह दस्तावेज रामन्द्रन की कृतियों का बहुरूप दर्शन है, जिसमें चित्रकार द्वारा इन दशकों में किये गये कार्यों का प्रदर्शन और विश्लेषण किया गया है। यह दृश्य भाषा की असंख्य संभावनाओं के साथ उनके प्रयोग से विकसित हुए उनके काम पर केन्द्रित है। सामाजिक और राजनीतिक दुनियाँ में बुराइयों और अन्याय के खिलाफ उनके विरोध के लिए खडे होने वाले प्रमुख व्यक्ति उनकी पेंटिंग की पहचान थे। पुस्तक हमें बहुआयामी कलाकार की दिलचस्प यात्रा के बारे में बताती है जिसने भारत में लघुचित्रों पर शोध किया है।

इस पुस्तक में उपयोग की गई दृश्य सामग्री व्यापक और दिलचस्प है, जैसे कि कलाकार की व्यक्तिगत तस्वीरें और कलाकार के जीवन के सफल चरणों से काम का पुनरुत्पादन। महाभारत की महाकाव्य गाथा के एक संस्करण ययाति नामक अपनी पेंटिंग श्रृंखला में उन्होंने मानव जीवन में विभिन्न चरणों को दार्शनिक स्पर्श के साथ चित्रित किया है।

फेस टू फेस, ईला दत्ता (1 जनवरी 2007)

ए0 रामचन्द्रन ने भारतीय कला परिदृश्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वह एक निरन्तर प्रयोगकर्ता और बहुमुखी कलाकार रहे हैं। इन वर्षों में उनके चित्रों ने एक शास्त्रीय स्मारक और उनके माध्यम और रंगों की चमक का उपयोग किया है। उन्होंने मूर्तियों का एक बड़ा शरीर भी बनाया है। तीन निबंधों और एक फोटो–निबन्ध की यह पुस्तक दिसम्बर 2007 में न्यूयार्क में उनकी एकल प्रदर्शनी के अवसर पर प्रकाशित की गयी थी, जिसमें राजस्थान के चेहरे, तैल में सिर का अध्ययन और दस जल रंगों का एक सैट शामिल है। पुस्तक ब्रहमाण्ड में सभी चीजों में जीवन शक्ति के प्रभाव को अपने दर्शन से आसवित करते हुए कलाकार के जीवन दर्शन और उसके व्यक्तित्व और उसके विषयों और स्वयं के साथ उसके रिश्ते को स्पष्ट करती है। यह उनके सौन्दर्यशस्त्र और उनकी विशिष्ट दृश्य शैली के विकास के बारे में उनकी टिप्पणियों पर प्रकाश डालता है, साथ ही साथ उनकी कलात्मक संवेदनाओं को ढालने में केरल और शांतिनिकेतन का प्रभाव रहा। आधुनिकतावाद

के साथ उनका जुड़ाव केवल एक अन्तरराष्ट्रीय मुहावरे के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि समकालीन संवेदनशीलता के अनुरूप एक पारंपरिक मुहावरे को फिर से गढ़ना है। अपने चित्रों के अलावा, उन्होंने मूर्तियों का एक बड़ा ढांचा भी बनाया है। एला दत्ता तीस से अधिक वर्षों से भारतीय कला और संस्कृति पर लिख रही हैं। आधुनिक और समकालीन कला पर उनकी टिप्पणियॉ सभी राष्ट्रीय और वित्तीय दैनिकों में प्रकाशित हुई हैं। उन्होंने कुछ प्रमुख भारतीय कलाकारों और कला के रुझानों पर कई कैटलॉग निबन्धों में भी योगदान दिया है।

कला के क्षेत्र में ए0 रामचन्द्रन का आगमन

ए0 रामचन्द्रन अपने करियर की शुरुआत में, वह एक अभिव्यक्तिवादी थे, जिन्होंने राजनीतिक कला को चित्रित किया था। लेकिन 1981 के दंगों के बाद, वह अब ''भयानक'' चीजों को चित्रित करना बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। उन्होंने मार्गदर्शन के लिए केरल के भित्ति चित्रों और पारंपरिक लोक परंपराओं जैसे की मधुबनी और वरली की ओर रूख किया, और उन्होंने पाया, कि इन शास्त्रीय परंपराओं में एक दिलचस्प विशेषता साझा की गई है–''वे सभी यूरोपीय कला की तरह प्रकाश और छाया के साथ नहीं, बल्कि रेखाओं के साथ संरचित है। चाहे वह अजंता हो या मधुबनी पेंटिंग इसमें रूप और सूक्ष्मता को परिभाषित करने वाली बारीक रेखाएं हैं। अजंता में आप यथार्थवाद देखते हैं, लेकिन आप रेखा–आधारित यथार्थवाद देखते हैं। यहीं पर उन्होंने अपनी शैली में स्पष्ट ''भारतीय कला व्याकरण'' की खोज थी।

शान्तिनिकेतन के सांस्कृतिक और बौद्धिक परिवेश ने उन्हें भारत और अन्य पूर्वी सभ्यताओं की कला परम्पराओं के करीब ला दिया और यहीं पर उन्होंने केरल में मंदिरों की भित्ति चित्र परम्परा पर अपना आजीवन शोध शुरु किया।

रामचन्द्रन के रेखा चित्रों में न केवल उनकी चित्रकला प्रक्रिया के रेखाचित्र और अध्ययन शामिल हैं। बल्कि चित्रों, फूलों, पौधों और परिदृश्यों से विकसित चित्र भी शामिल हैं। 56 वर्षों की अवधि में, उन्होंने पाँच हजार से अधिक चित्र बनाएं। जिनमें अब हम विभिन्न प्रकार के कागजों पर उनकी स्याही के स्ट्रोक के विकास को देखते हैं।

अपने शुरुआती दिनों के बारे में बताते हुए, जब उन्होंने पेंटिंग करना शुरु किया, तो रामचन्द्रन कहते हैं, ''मैं भाग्यशाली था, कि मुझे शान्तिनिकेतन में रामकिंकर बैज के तहत ड्राइंग का अध्ययन करने का मौका मिला, जिन्होंने मुझे एक आधुनिक भारतीय कलाकार के रूप में तलाशने के लिए एक नया दृष्टिकोण और दर्शन दिया। चित्रकारी की आदत मेरी कला साधना का अभिन्न अंग है। चूंकि मैं एक कलाकार के रूप में प्रकृति के गहन अध्ययन और पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों परम्पराओं का अध्ययन और संयोजन करके उन्हें अपनी व्यक्तिगत शैली में पुनः संयोजित करने के आधार पर विकसित हुआ हूँ।''

'साबल्टर्न नायिकाऐं एण्ड लोटस पॉन्ड' शीर्षक के तहत उनकी तेरह नई पेंटिंग्स प्रदर्शित की गई, लॉकडाउन के दौरान इस कलाकार ने किस तरह इस लम्बे समय का उपयोग अवसाद में घिरने के बजाय अपनी कला में अभूतपूर्व प्रयोग कर उसे एक नई शैली प्रदान की, अपनी इस एकल प्रदर्शनी में पेंटिंग्स की भव्यता और सूक्ष्म अभिव्यक्तियों द्वारा उन्होंने अपनी नवीनतम रचनात्मकता को प्रतिबिंबित किया है, जिसने उन्हें उन दो वर्षों की महामारी के दौरान उदासी से भरे माहौल का मुकाबला करने में मद्द रामचन्द्रन के चित्रों में तीन दशको से राजस्थानी आदिवासी भील महिलाएं सौन्दर्यशास्त्र के रूप में कायम रही हैं, रेगिस्तानी राज्य के उदयपुर में फैले जलाशय लम्बे समय से केरल में जन्मे रामचन्द्रन का एक और जुनून रहे हैं। जिसका परिणाम हमारे सामने 'लोटस पॉण्ड' श्रृंखला के रूप में है, रामचन्द्रन कहते हैं, ये पेंटिंग उन दिनों की है जब सब से कट कर एक अवसाद भरे माहौल में मैं सारे दिन घर में बैठने को मजबूर था, मेरे चित्रों में उदयपुर और उसके आप–पास के आदिवासियों का सदा से प्रभाव रहा है। यह एक तरह का ऐसा अनुभव था जिसे 'शान्ति में पुरानी बातों को याद करना' कहा जा सकता है, ये रंगों और रेखाओं की खोज करते हुए अनुभवों को पुनः आकार देने के पल थे, ए0 रामचन्द्रन ने अपनी इन पेंटिंग्स में रंगों को अलग ही ढंग से उकेरा है। सौन्दर्यशास्त्र के लिए रामचन्द्रन की प्राथमिकता एक लम्बे समय से चली आ रही बात है। शान्तिनिकेतन के चार साल के प्रशिक्षण के बाद, उन्होंने जो कुछ सीखा, उससे वह काफी खुश थे। वह कहते हैं, ''मेरे कुछ दोस्तों और सहकर्मियों की तरह मुझे कभी भी इंग्लैण्ड या फ्रांस या कहीं और पढ़ने जाने का मन नहीं हुआ।''

उन्हें भारतीय लघु चित्रकला का भी विशेषज्ञ माना जाता है और उन्होंने बाल साहित्य में भी कार्य किया है। वह एक प्रसिद्ध कला शिक्षक और शोधकर्ता भी है। उन्होंने 1965 में दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया कॉलेज में नौकरी स्वीकार कर अध्यापन किया। वह 1992 तक वहां विभाग के प्रमुख थे। जामिया विश्वविद्यालय में अपने शिक्षक के दिनों में, उन्होंने भारतीय चित्रों के विभिन्न पहलुओं का विस्तार से अध्ययन किया। उन्होंने साझा किया कि वे केरल भित्ति चित्रों, नाथद्वारा चित्रों और अजन्ता भित्ति चित्रों से प्रेरित हैं और उन्होंने अपने काम में बड़े पैमाने पर उनका उपयोग किया है। ''उन्होंने कहा।'' भारतीय चित्रों में रेखाओं की एक निश्चित प्रधानता और एक सजावटी तत्व है जिसे आप मेरे कार्यों में देख सकते हैं।

उनके कला दर्शन का कुछ अंश शान्तिनिकेतन से मिलता है। लेकिन वह चित्रकार बनने के इरादे से वहां नहीं पहुंचे। एक छोटे बच्चे के रूप में, वह मलयालम लेखकों के बहुत बड़े प्रशंसक थे। उनके कुछ शिक्षक अपने समय से आगे थे और उन्होंने बशीर जैसे प्रगतिशील लेखकों को अपने छात्रों को पढ़ाया। वह कहते हैं, ''वे प्रगतिशील किताबें जिन्हें परिवार के लोग कभी नहीं पढ़ते थे, मैं खुद पढ़ने के लिए उन किताबों को खरीदता और छुपाता था।'' मलयालम साहित्य में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने शान्तिनिकेतन में केरल भित्ति कला का अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त की। संयोगवश, केरल के भित्तिचित्र एक कलाकार के रूप में रामचन्द्रन के विकास का मार्ग बन गए। कई दशकों के बाद भी, उन्होंने अपने शान्तिनिकेतन प्रशिक्षकों को सबसे महत्वपूर्ण कलाकारों के रूप में नामित करना जारी रखा है जिनसे उन्होंने सीखा है। ''शान्तिनिकेतन और अन्य कला विद्यालयों के बीच अन्तर यह है कि शान्तिनिकेतन ने कभी कला नहीं सिखाई, ''वह बताते हैं। एक समय में 15 दिनों के लिए, छात्र अगले मॉडयूल पर जाने से पहले कला का एक माध्यम जैसे जल रंग या फ्रेस्को या मूर्तिकला सीखेंगे। ''मूल विचार यह था, जब छात्र तकनीक सीख रहे थे। उन्हें स्वतन्त्र रूप से बाहर जाना चाहिए और प्रकृति में रेखाचित्र बनाना चाहिए और अपनी ड्राइंग की भावना, संरचना की भावना विकसित करनी चाहिए,'' वह बताते थे। स्वतन्त्र अध्ययन में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण साबित हुई।

रामकिंकर बैज ने उन्हें सिखाया कि प्रकृति के हर हिस्से की अपनी एक संरचना होती है। ''चाहे वह एक पत्ता हो या एक मानव शरीर या एक जानवर–उन सभी की एक संरचना होती है। उनकी कंकाल प्रणाली, उनकी मांसपेशी प्रणाली, जो बाहरी स्वरूप को निर्धारित करती है। एक बार जब आप आन्तरिक संरचना को समझ लेते हैं। तो आप जो भी बनाएंगे वह सही होगा,'' कलाकार स्पष्ट करते हैं। वह चेतावनी देते हैं, कि यदि कोई किसी वस्तु के केवल बाहरी स्वरूप को ही समझता है, तो परिणाम अनाड़ी या अप्रामाणिक होगा। जैसे ही उन्होंने पाया, कि यह बात घास के एक तिनके से लेकर पेड़ तक, एक लड़की से लेकर बादल या पानी की हलचल तक हर चीज़ के लिए सच है। वह स्पष्ट है कि वह किसी व्यक्ति को चित्रित नहीं करता है, बल्कि उसके शरीर की संरचना और उसके पर्यावरण के साथ उसके संबंध के माध्यम से व्यक्ति की समानता को चित्रित करता है। वह पेंटिंग के स्टूडियो मॉडल का श्रेय नहीं लेते, जिसे वह बारीकियों की कमी वाली झांकी के रूप में देखते थे।

ए0 रामचन्द्रन के चित्रों की रंग योजना एंव कला शैली

ए0 रामचन्द्रन की कलात्मक कल्पना में प्रकृति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पिछले बीस वर्षों से, उन्होंने प्राकृतिक वातावरण की कई मनोदशाओं, इसकी हरी–भरी प्रचुरता, इसकी आकर्षक कामुकता और इसकी श्रेय की हवा का चित्रण किया है। प्रकृति का हलचल भरा रंगमंच उस स्थान को एक जटिल और समृद्ध टेपेस्ट्री में बदल देता है जिससे उनकी कला में नाटकियता की भावना पैदा होती है।

ए0 रामचन्द्रन के काम की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है, कि वह खुद को कैनवास पर एक कथा की तरह इतने व्यापक रूप से चित्रित करते हैं कि वह अपने स्वयं के चित्रों के आस–पास एक पौराणिक कथा बना देते हैं। पक्षी, मछली, कछुआ, चमगादड़ और अन्य प्राकृतिक और भ्रूण रूपों जैसी विभिन्न भूमिकाओं में अक्सर एक मज़ाकिया और आनंदमय स्पर्श होता है, जिसमें उन्होंने खुद को ढाला है। प्रकृति की आत्मा, जीवन के पुनरुत्थान और उसके कठोर निषेध के साथ तादात्मय की यह भावना उनके कई जलरंगों और तेल चित्रों में प्रकट हुई। स्वयं के इन अवतारों में कलाकार द्वारा उपदेशात्मक हुए बिना अपने विशिष्ट विश्व–दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए अपने व्यक्तित्व का प्रतीकात्मक उपयोग निहित है और यह

कलाकार की विविध मनोदशाओं को व्यक्त करने में भी मद्द करता है। पिछले कुछ वर्षों में, द गिल्ड द्वारा प्रकाशित ए0 रामचन्द्रन आधुनिकतावाद के साथ उनका जुड़ाव एक अन्तरराष्ट्रीय मुहावरे के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि समकालीन संवेदनशीलता के अनुरूप एक पारंपरिक मुहावरे को फिर से गढ़ने तक सीमित नहीं है। अपनी पेंटिंग्स और भित्तिचित्रों के अलावा, उन्होंने मूर्तियों का एक बड़ा समूह भी बनाया है।

पुनरुत्थान के अनुष्ठान 'महिला रूप ने मुझे हमेशा आकर्षित किया है, मैं कभी–कभी पुरुष दृष्टि नामक बीमारी से पीड़ित हो जाता हूँ। दुनियाँ भर के साहित्यिक ग्रन्थों ने एक महिला की स्थलाकृति में कामुक क्षेत्रों की प्रचुरता की प्रशंसा की है। प्राचीन मूर्तियों में भारी स्तन और पेट की तह हमेशा मेरी स्मृति का हिस्सा थे। तो मैं इसका उपयोग क्यों नहीं कर सकता? मुझे विश्वास है जैसे–जैसे भारतीय कला जटिलताओं और परिष्कार की ओर बढ़ती है, पुरुष की दृष्टि की मौलिकता और स्वतन्त्रता कम हो जाती है। कला में धारणा अवशोषण की प्रक्रिया से विकसित होती है किसी और को देखने में भावनात्मक भागीदारी के साथ–साथ व्यक्ति खुद को भी देखता है।'

पूर्णिमा की रात में नृत्य स्पष्ट रूप से स्त्री अपनी कामुक भव्यता में निखर कर सामने आता है, कभी–कभी एक शानदार लम्बें बालों वाली युवती (द स्ट्रीम) के रूप में, कभी–कभी एफ्रोडाइट अनुपात (मानसून की पहली बूंद) के प्राणी के रूप में, संसार (ब्रह्मांड) में प्रकृति की पूर्णता का रूपक है। मेरे कार्यों में छवियाँ विभिन्न स्तरों और दृष्टिकोणों के विचारों को व्यक्त करती हैं।

मानसून के फूल कमल तालाब सृजन और ब्रह्मांडीय नवीनीकरण का प्रतिनिधि है। यह पवित्रता का भी प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि इसके फूल लम्बे डंठलों पर उगते हैं, जिनकी जड़ें कीचड़ में होती हैं। यह वैराग्य का भी प्रतीक होती हैं, क्योकि इसकी पंखुड़ियों से पानी की बूंदें आसानी से फिसल जाती हैं। रामचन्द्रन के सर्वश्रेष्ठ कार्यों में, ये दो दुनियाएँ–वास्तविक और काल्पनिक, पौराणिक और वास्तविक–आपस में जुड़ने लगती हैं। व्यक्ति में किसी वास्तविक चीज़ को कल्पना और अनुभव के चश्मे से देखने की भावना होती है।

पक्षियों की उड़ान इस प्रदर्शनी में काम अधिक पौराणिक रूप से बंधे हुए और रूपक रूप से कलातीत हैं, जहाँ तक वे जो चित्रित करते हैं वह स्पष्ट है। लेकिन इसमें काल्पनिकता के स्पर्श भी हैं। उदाहरण के लिए, लोटस एट नाइट में कमल के पत्तों की छाया हमेशा उन फूलों से मेल नहीं खाती है, जिनसे वे प्रकट रूप से बने हैं। रोशनी अक्सर डरावनी होती है और कलाकार के देखने के तरीके में आप संध्या (सूर्यास्त) की भूमिका में जाते हैं। ऐसा लगता है, जैसे कि रामचन्द्रन ने हमें संध्या की धुंधली रोशनी में कमल के तालाब की पुनर्रचना कर दी है, ताकि हमें एक गोधुलि आभा मिल सके जो मौज–मस्ती के जादू से भरी है।

हालाँकि, 'फर्स्ट ड्रॉप्स ऑफ मानसून' में वास्तव में काल्पनिक तत्व स्वयं वस्तुएं हैं–और पानी के ऊपर और नीचे दो समतलीय विभाजन, फूल और सुस्वादु बक्सोमेड महिला, जिसे वह शारीरिक पूर्णता के गर्वित विधेय के रूप में रखता है। और वास्तव में दिलचस्प यह है, कि इन सुस्वादु प्राणियों को आभूषणों से कैसे सजाया जाता है अधिकांश इतने अपरिचित हैं, कि हम उन्हें करीब से देखना चाहते हैं। हालाँकि, इस संदर्भ में, रोजमर्रा की दुनियाँ के दृश्य अव्यवस्था से अलग, कामुक अश्लीलता से बहुत दूर जो कई छवियों द्वारा हमारी नाक के नीचे धकेल दी जाती है। ये महिलाएं सामग्री की क्लासिज्म का हिस्सा हैं। कैनवास पर रामचन्द्रन की कलात्मक भूख को विराम देने वाली किशोर हड्डियाँ वाली उर्वशी को आसानी से पहचाना जा सकता है। इतना कि यह दुबली–पतली प्राणी एक अद्भुत चरित्र धारण कर लेती हैं।

कभी–कभी मिथक सड़क के किनारे प्रकट हो सकता है, कभी–कभी बचपन की यादें इन्द्रधनुष से रंगी हो सकती हैं, कभी–कभी कामुकता का कम्पन्न आकाशिय कैनवास की ओर ले जा सकता है। जो अधिकतम इरादे की चन्द्र नदी को प्रतिध्वनित करता है। लेकिन कलात्मक जड़ों की तलाश में कमल के अवतार में अपने लेटमोटिफ़ के रूप में तालाब, कलाकार रामचन्द्रन का शो दर्शाता है, कि कला न केवल परंपरा को फिर से परिभाषित करती है, बल्कि एक कलाकार के ब्रश को प्राचीन मिथकों और विद्या के रंग में भी डुबो देती है। शीर्षकों और स्थिति में उनकी विचित्र बुद्धि 'द ड्रीम ऑफ

पालिटिकली इनकरेक्ट आर्टिस्ट' में कमल के पत्ते पर एक 70 वर्षीय व्यक्ति के सिर और एक नवजात शिशु के शरीर के साथ एक छोटी छवि के रूप में खुद को पूरी तरह से उनके मस्तिष्क और कलात्मक कौशल का प्रतीक है।

काम का जादू, फिर शैली के सम्मेलनों में उतना ही निहित है, जितना कि रामचन्द्रन की कमल तालाब की हल्की टोन वाली भव्यता में प्रस्तुति। जीवन से गर्भवती और उसकी लीला में चंचल। इस अवसर पर कि यह शो दुनियाँ के सबसे बुनियादी रूपों में भौतिक पहलू को देखने, उस पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है। रामचन्द्रन हमारे लिए उर्वशियों को लेकर आते हैं, जो मिट्टी से पैदा होती हैं और तत्वों के साथ रहती हैं–धूल, हवा, बारिश, रेत और सूरज। यह शैली के प्रति रामचन्द्रन का अमर आलिंगन है। शास्त्रीय भारतीय कला की इस योग्य और अनिवार्य रूप से कामुक परंपरा में उनकी कुशल भागीदारी है, जो सृजन का एक नख्लिस्तान लाती है। जो कमल के तालाब में पौराणिक दिखने वाले कांच की जीवन शक्ति और कम्पन्न को प्रतिध्वनित करती है। जो उभरता है वह है, शान्ति के गर्भ से जन्मी दिव्यताओं की सनक।

अभिव्यंजनात्मक तत्वों का संयोजन

ए0 रामचन्द्रन ने नायिकाएं एण्ड लोटस पॉन्ड शीर्षक के अर्न्तगत उनकी 13 नई प्रदर्शनीयॉ लगाई। इन्हें देखकर आप जान जाएंगे कि लॉकडाउन के दौरान इस कलाकार ने किस तरह इस लम्बे समय का उपयोग अवसाद में गिरने के बजाय अपनी कला को अभूतपूर्व प्रयोग कर उसे एक नई शैली प्रदान की। अपनी एकल प्रदर्शनी में पेंटिंग की भव्यता और सुख सभी व्यक्तियों द्वारा उन्होंने अपनी नवीनतम रचनात्मकता को प्रतिबिम्बित किया है। जिसने उन्हें उन दो वर्षों की महामारी के दौरान उदासी से भरे माहौल का मुकाबला करने में मदद की। रामचन्द्रन के चित्रों में तीन दशकों से राजस्थानी आदिवासी भील महिलाएं सौंदर्यशास्त्र के रूप में कार्य कर रही हैं। यह प्राचीन नाट्यशास्त्र के प्रति विशिष्ट श्रृद्धा रखते हुए काम करने का उनका एक तरीका है। यह आठ महिलाएं तो उनके चित्रों में केन्द्र में हैं। वे भरतमुनि के प्रसिद्ध ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में वर्णित आठ प्रकार की नायिकाओं उन्हें अष्टनायिका कहते हैं का चित्रण है। रामचन्द्रन ने केरल वॉल पेंटिंग की परंपरा पर शोध कार्य किया। राजस्थान राज्य के उदयपुर में फैले जलाशय लम्बे समय से केरल में जन्में रामचन्द्रन का एक और जुनून रहे हैं। जिसका परिणाम हमारे सामने लोटस पॉन्ड श्रृंखला के रूप में है। रामचन्द्रन कहते थे, यह पेंटिंग उन दिनों की है जब सब से हटकर एक अवसाद भरे माहौल में मैं सारे दिन घर में बैठने को मजबूर था। मेरे चित्रों में उदयपुर और उसके आसपास के आदिवासियों का प्रभाव रहा है। यह एक तरह का ऐसा अनुभव था, जिसे शांति में पुरानी बातों को याद करना कहा जा सकता है। यह रंगों और रेखाओं की खोज करते हुए अनुभवों को आकार देने के पल थे। पदम भूषण पुरस्कार, कालिदास सम्मान और राजा रवि वर्मा पुरस्कार जैसे प्रतिष्ठित सम्मान उन्हें प्राप्ति है। यह रामचन्द्रन ने इन पेंटिंग्स में रंगों को अलग ही ढंग से उकेरा है उनके चित्रों में विभिन्न रंगों की बहुत ही पतली परतें खूबसूरती से एक–दूसरे से जुड़ती हैं प्रत्येक परत पहली वाली परत को सौन्दर्य में बदल देती है, और उसे नए रूप में बदलने में मदद करती थी। चमकीले गहरे रंग एक साथ उभरते थे, और पूरी रचना को एकात्मकता प्रदान करते थे।

पेंटिंग तभी पूरी होती है जब आपके अन्दर जो कुछ भी है वह आप कैनवास पर उड़ेल देते हैं। वह अन्त है। उसके बाद आप जानते हैं, कि आपके पास कुछ भी नहीं बचा है। मैं कभी भी कैनवास के ऊपर नहीं देखता, ऐसा ही रामचन्द्रन कहते थे, मैं अपने अंदर देखता हूँ कि कुछ बचा तो नहीं है। अब हमारे पास बस इतना ही है। ऐसा लगता है कि किसी कार्य की तैयारी के बारे में इस निर्णय के लिए संकल्प की भावना महत्वपूर्ण नहीं है। कोई पेंटिंग हल नहीं हुई है, वह दौर आता है, क्योंकि आप देखते हैं। आप कुछ धारणाओं के साथ कार्य शुरु करते हैं। आप क्या करना चाहते हैं। यह एक इमारत के लिए आर्किटेक्ट की योजना की तरह नहीं है। तुम्हें पता है, कि क्या हुआ था कि मैं एक कमल के तालाब के पास बैठा था, और मैने एक छोटा सा पत्थर फेंका मेरे बड़े आश्चर्य के लिए पत्तियों के नीचे मुझे नहीं पता था, कि इतने सारे पक्षी हैं। बेबस उड़ गए मुझे लगा कि यह नवीन लोक हैं, जो कमल पत्तों के नीचे छिपा है। तो यह धारणा मैं ले गया। लेकिन फिर यह मेरे पास मौजूद अनुभव का पुर्नविक्रय है, जो कुछ वर्ष पहले हुआ था यह आपके दिमाग में वापस आता है और आप पेंट करने के लिए तैयार हैं। आप जानते हैं, कि पेंटिंग कैसी होनी चाहिए फिर आपको एक सचित्र संरचना के बारे

में सोचना होगा तो आप कमल के पत्तों के खिलाफ पक्षियों की उड़ान को जानते हैं और फिर आकाश आपको इसे इस तरह से बनाना होगा कि सब कुछ सही क्रम से बने।

आश्चर्यजनक रूप से रामचन्द्रन ने सबसे पहले पक्षियों को जीतकर शुरुआत की, क्योंकि आप पहले कमल के पत्ते करना शुरु नहीं कर सकते आपको पता नहीं चलेगा कि वास्तव में क्या व्यवस्थित होने जा रहा है, वे कहते थे हमेशा की तरह, कमल का तालाब उभरा हुआ ही दिखाई देता है, उनके एकल शो ''द चेंजिंग मूड ऑफ द लोटस पॉन्ड'' और ''इन सिग्निफिकेंट अवतार इन त्रिवेणी कला'' के कार्यकाल को ध्यान में रखकर उनकी कला का आभास किया जाए। वासवानी के अनुसार कमल के तालाबों के सात बड़े चित्रों से इस शो की जड़ का गठन किया। जो उदयपुर के इन ग्रामीण क्षेत्रों को रामचन्द्रन ने कैनवास पर उतारा। उनके कामों की सुन्दरता और जटिल रूपों की खोज की। साथ में 10 विनोदी चित्र में 3 अवतारों का एक सैट दिखाया गया था जिसमें कलाकार वनस्पति परिदृश्य के बीच अपने विशिष्ट कैरीकेचर रूप में दिखाई देता है। उनकी प्रत्येक बड़ी पेंटिंग घंटों की अवलोकन आधारित अध्ययन का परिणाम है, जो हजारों रेखा चित्रों और दृश्यों के रूप में प्रकट होती है। एक कलाकार के रूप में रामचन्द्रन की पेंटिंग प्रकृति को प्रस्तुत करती है। रेखाओं को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना उनकी आंतरिक अभिव्यक्ति प्राप्त करने की एक कोशिश है वह केवल पत्ते नहीं बनाते जीवन के प्रभाव को प्रस्तुत करते हैं। जो प्रत्येक छवि से होकर गुजरता है। वह एक पेंटिंग को अपना जीवन देते थे।

स्केचिंग रामचन्द्रन की प्रक्रिया का एक मौलिक हिस्सा है। जब वह अपने विषय के साथ समय बिताते हैं। फिर अपने स्टूडियों के दायरे में फिर से प्रवेश करते हैं। यह उनकी पेंटिंग का आधार बनता है। एक बार जब वह कार्य शुरु कर देते हैं तो एक पेंटिंग को पूरा करने में औसतन डेढ़ से दो महीने का समय लगता है। एक साल में कुल मिलाकर तीन से चार पेंटिंग करता हूँ रामचन्द्रन जी कहते हैं; कि कुछ कार्य बड़े हैं। कुछ सिर्फ दो या तीन पैनल है, लेकिन मैं एक कलाकार हूँ, जो एक एकड़ में पेंट करता है। रामचन्द्रन जी कहते थे, कि मैं एक उपन्यासकार की तरह हूँ मुझे छोटे कैनवास की तुलना में अभिव्यक्ति के बड़े आयाम पसंद हैं। ज्यादातर कलाकार जब पेंटिंग करते हैं तो उन्हें लगता है कि इसे बेचना है या इसे किसी के घर में रखना है, इसलिए वे इसके बारे में सोचते हैं, कि वह अपनी पेंटिंग का क्या आकार रखें। मुझे लगता है, कि मेरी पेंटिंग जनता के लिए है, जो प्रतीत होता है, कि रामचन्द्रन के कलात्मक अभ्यास में शुरु से ही एक निरंतर बनी हुई है। वह सदैव एक बड़े म्यूरल पर काम करते हैं। वह चुने हुए विषय के साथ कार्य करते हैं। हर बोधगम्य दृष्टिकोण से इसकी जाँच करने की बेचैनी मजबूरी अपने कैरियर की शुरुआत में यह हैडलेस ह्यूमन एनाटॉमी के साथ फिक्सेशन था। 1966 में कुमार गैलरी में अपनी पहली एकल प्रदर्शनी की समीक्षा करते हुए एक बार तो लोगो ने थॉट में लिखा। आप डेक्कन का एक स्पष्ट रूप देख सकते हैं। लेकिन अति यथार्थवाद जैसा स्पष्ट रूप भी नहीं है। मानव आकृति कोई समय को जोड़ने वाला उपकरण नहीं है। संवेदनाएं बुझी हुई हैं, वह स्मृति के रूप में दिखाई देती हैं। रामचन्द्रन का यकीन है कि उन्होंने अभी तक अपनी उत्कृष्ट कृति का निर्माण नहीं किया है। वह अपने शुरुआती काम को देखते हैं और सोचते हैं, कि उनका सौन्दर्य अभी तक विस्तृत नहीं हुआ है जब छोटे थे और मैदान में आया करते थे, तो निश्चित रूप से वे अपरिपक्व थे और शायद थोड़ा सा सक्षम थे। लेकिन इतना परिपक्व नहीं थे, कि पेंटिंग की पूरी प्रक्रिया को समझ सके। लेकिन सिर्फ शुरुआती दिनों की बात थी। यह एक संगीतकार की तरह जो गाना शुरु करता है या एक लड़का जो नाचना शुरु करता है, लेकिन फिर जैसे–जैसे आप अभ्यास करते हैं। आप एक पेशेवर बन जाते हैं; और वर्षों के अभ्यास के बाद आप जो कर रहे हैं। उस पर ध्यानपूर्वक शुरु करते हैं जब इन्होंने शुरुआत की थी तब यह एंग्री यंग मैन थे। इनके पास पैसे नहीं थे तथा यह कोलकाता की गलियों में काम किया करते थे। उन दिनों को याद करते हुए जैसा कि वे नंदलाल बोस और रामकिंकर बैज के संरक्षण में शांति निकेतन के छात्र के रूप में अपने समय की बात करते हैं और कहते थे ''मैं पूरी तरह से एक अनजान कलाकार के रूप में दिल्ली आया था मैं केरल से राजनीति का अपना बंडल अपने साथ ले गया और जब मैं एक छात्र था। तब मेरी उम्र से अधिक समय से कटटरपंथी पृष्ठभूमि थी। यह सभी चीजें मेरे शुरुआती काम में झलकती थी ''जब उन्होंने विषयवस्तु में बदलाव किया, तो उनके समकालीन कलाकार ने उनके अभ्यास को ऐसे देखा कि वे अभी सजावटी चित्रकार हैं। इसके जवाब में यूरोपियन लोग भारतीय कला का नाम सजावटी कला के रूप में लेते हैं, और उनका कहना था कि भारतीय सजावटी हैं, उनका साहित्य सजावटी है, और अगर आप हमारे व्यंजन की शैली को ले, तो आप गाँव में जाते हैं। वह फर्श पर यह पोस्ट डिजाइन बनाते हैं। मेरी सजावट दृश्य भाषा का एक

बहुत ही परिष्कृत हिस्सा है। यह सजावट की सामान्य भावना नहीं है। इसलिए क्योंकि यूरोपीय लोगों ने इस शब्द का प्रयोग किया है। क्या कला शिक्षकों के लिए अपने साथी भारतीयों के बारे में ऐसा कहना फैशनेबल है या मूर्खता है। इनमें से क्या सही है। रामचन्द्रन दावा करते थे, कि उनकी कला केरल के बीच में चित्रों पर उनके थीसिस की उपाधि, जिसे उन्होंने पुस्तक के रूप में प्रकाशित भी किया। यह स्पष्ट करती है, कि उनके समकालीन कलाकारों के लिए उनकी कला सजावटी थी पर वास्तव में यह सौन्दर्य विकल्पों की एक श्रृंखला का परिणाम था जो जुड़ाव इस बात का उदाहरण है। कि उनको तैलकार्य में महारत प्राप्त थी। रामचन्द्रन तैल रंगों को जल रंगों के समान पारदर्शी कैनवास पर प्रस्तुत करते थे। रामचन्द्रन ने शुरुआती चित्रों में किस प्रकार के रंगों का प्रयोग किया था। उनके पास कोई पेंसिल नहीं थी। पीले रंग की पृष्ठभूमि पर सीधे ब्रश से चित्र बनाते थे। इससे शीर्ष पर वे चाक के साथ मूल संरचना खींचते और चारकोल की मदद से शुरु करते, और रंग पानी के रंगों जैसे हो जाते। रामचन्द्रन अपने शोध में लिखते हैं, कि केरल की विधि चित्र परंपरा की पृष्ठभूमि के साथ–साथ जापानी स्क्रीन पेंटिंग से भी उन्होंने बहुत कुछ सीखा है। जिसके कारण उन्होंने अपने कैनवास को खंडित करने के लिए चैनलों का प्रयोग किया। यदि आप रामचन्द्रन के कैनवास पर काफी ध्यान से देखते हैं, तो आप उस ग्रेड का पता लगा सकते हैं, जो उन्होंने अपने अनुपात को निर्देशन करने के लिए विकसित किया है।

ए0 रामचन्द्रन की कला मानव मस्तिष्क पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ती है यही कारण है कि रामचन्द्रन की कला को अभिव्यंजनावाद के रूप में देखा जा सकता है। रामचन्द्रन ने चित्रकला, बाल कला एवं म्यूरल चित्रों का सृजन कर सामाजिक व संवेगात्मक शाक्तियों के साथ मानसिक जकड़न से मुक्ति का द्वार खोलने का प्रयास किया। रामचन्द्रन के विषयों में कलाकृतियों का उचित मूल्यांकन दिखाई देता है। भारतीय कला एक अलग रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होती है। आज की कला में मुख्य रूप से देखा जा सकता है, कि कलाकार कलाकृतियों को बनाने में अपनी कल्पना व आभासों का प्रयोग करते हैं। अधिकतर व्यक्ति सत्य को ही चित्रों में देखना पसंद करते हैं तथा उन्हीं चित्रों में अपनी रूचि दिखाते हैं, जिन्हें वे अपने जीवन के करीब पाते हैं। परन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जो यथार्थवाद से दूर जाकर एक काल्पनिक दुनियाँ में रहना पसंद करते हैं, अपनी इच्छाओं की पूर्ति अपनी कला के द्वारा ही करते हैं। इसी प्रकार रामचन्द्रन ने भी अपनी चित्रकला में उन रंगों व रूपाकारों का सुन्दर मनमोहक प्रयोग किया है। जिन्हें उन्होंने अपने जीवन काल में बचपन से बड़े होने तक देखा। उनके चित्रों में एक अलग ही नारी को प्रस्तुत किया गया था।

रेखाओं में जितनी गति व लयात्मकता है, वह किसी अन्य तत्व में इतनी नहीं है। आधुनिक कला में आज जहाँ सब कुछ शीघ्रतायुक्त है, वहीं रेखा का महत्व ''तत्कालीन प्रभाव'' (स्पानटेनियस रिऐक्शन) लिए एक माध्यम है। आधुनिक भारतीय कलाकारों की कृतियों में रेखायें न केवल भिन्न अनुभवों पर आधारित हैं, बल्कि इनके भाव, तकनीक, सामग्री सभी में नवीनता है।

रामचन्द्रन कृत भारतीय पुनर्वास **(चित्र संख्या 1)** राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली संग्रह में संग्रहित है। इस चित्र में रामचन्द्र ने मानवता को पुर्नजीवन के लिए संघर्ष करते हुए दर्शाया है। सम्पूर्ण चित्र में सिरविहिन मानवाकृतियों को पेड़–पौधों की रक्षा के लिए बनायी गयी बडी से बंधे हुए अंकित किया है। ये आकृतियाँ स्वयं को मुक्त कराकर स्वतन्त्र होने को तत्पर प्रतीत हो रही हैं। मध्य में तैरते मानवाकृतियों से बने वृत्त में यह संघर्षपूर्ण दृश्य हैं। सम्पूर्ण दृश्य ऐसा प्रतीत होता है जैसे भाग्य के निर्णय के दिन का दृश्य है।

अन्य चित्र प्रतिमा विज्ञान **(चित्र संख्या 2)** ललित कला अकादमी नई दिल्ली में संग्रहित है। इस चित्र में रामचन्द्रन ने सृष्टि सृजनकर्ताओं की त्रिमूर्ति (ब्रह्यमा, विष्णु व महेश) के रूप में अंकित है। चित्र के मध्य में ब्रह्यमा के कल्याणकारी स्वरूप को दर्शाया है। वहीं बाँयी ओर की आकृति विष्णु के रूप में कृष्ण की है जिनके तीर को संहारक के रूप में चित्रित किया गया है। तथा दाहिनी ओर की आकृति शिव की है जो सौभ्यता को प्रस्तुत करती है। इस कृति में रामचन्द्रन ने सृष्टि के पालनहारों को एक साथ दर्शाया है। तथा कृति में सृष्टि के निरन्तर सृजन और विनाश के चक्र को भावों के रूप में स्पष्ट किया है।

1970 कृत एक अन्य चित्र एक तूफान सीलिंग **(चित्र संख्या 3)** कलाकार के संग्रह में है इस चित्र में रामचन्द्रन ने चार वर्गाकार कैनवास को जोड़कर केन्द्र में गोलाकारों के संयोजन द्वारा गुम्बदीय रूप दिया है। जिसमें नग्न पुरुषाकृतियों को चढ़ते उतरते व बैठे हुए आभाषित किया है। 1977 का निर्मित एक अन्य ईजल चित्र डांसिंग ऑन अमावस्या नाईट **(चित्र संख्या 4)** श्रीमति शकुन जैसवाल, नई दिल्ली के संग्रह में है इस चित्र में रामचन्द्रन ने दो नारी आकृतियों को नृत्य में मग्न एक–दूसरे का हाथ पडके चित्रित किया है ये आकृतियाँ बलिष्ठ हैं। पृष्ठभूमि में ज्यामितीय संयोजन किया है तथा अग्रभूमि में पुष्पों का अंकन है। इसी श्रृंखला में रामचन्द्रन ने 1982 में बैठी हुई स्त्रियों के दो चित्रों को **(चित्र संख्या 5)** की एक श्रृंखला का निर्माण किया, जो श्रीमति शकुन जैसवाल, नई दिल्ली के संग्रह में है यद्यपि दोनों मुखविहिन है। फिर भी दोनों चित्रों में चेहरे आमने–सामने विपरीत दिशा में बनाये गये हैं। दोनों ही आकृतियाँ पहाडियों से घिरी प्रकृति के मध्य बैठी अंकित है।

अन्य चित्र द्वारा कमल सरोवर **(चित्र संख्या 6)** कुमार गैलरी नई दिल्ली की कमल कुमार के संग्रह में है जिसे रामचन्द्रन ने 1987 में बनाया था इस चित्र में गहरे लाल वर्ण का ऊँचा–नीचा तालाब बनाया है जिसमें सफेद कमलपुष्पों के साथ कमलपत्तों क अंकन है। इस सरोवर के मध्य एक हरी त्वचायुक्त स्त्री का अंकन है। जो सर्प के समान रेंगती हुयी प्रतीत हो रही है।

इसके अतिरिक्त (1990) में निर्मित उर्वशी एवं पुरूखा श्रृंखला से सम्बन्धित चित्र उर्वशी और उसकी सखियाँ **(चित्र संख्या 7)** कुमार गैलरी नई दिल्ली के सुमित कुमार संग्रह में है। इस चित्र में रामचन्द्रन ने उर्वशी के मध्य में तीर पडके अंकित है तथा अन्य दो सखियों के रूप में उर्वशी के ही प्रतिबिम्बों का अंकन है। तीनों के शरीर स्कर्ट के छोरो से एक सार जुडे हैं। पृष्ठभूमि में पहाड़ियों व कमलों क अंकन है।

उर्वशी और मिनोतौर **(चित्र संख्या 8)** कुमार गैलरी के संग्रह में संग्रहित है इस कृति में रामचन्द्रन ने उर्वशी के द्वि–मुखी रूप में अंकित किया है। उसके हाथों की मुद्रायें बहुत प्रभावी हैं। अग्रभूमि में एक मिनोतौर (नरवृषभ) को कागज व तुलिका के साथ बैठे हाथ में कमल पुष्प लियं अंकित किया है। किन्तु इनके चेहरे के भावों से स्पष्ट हो रहा है जैसे वह उर्वशी के ख्यालों में हैं इसी दृश्य को दर्शाने हेतु रामचन्द्रन ने मिनोतौर के समीप अंकित कमल सरोवर से पुष्प को तोड़ती उर्वशी का अंकन किया है।

समकालीन कला में भी भित्ति चित्रण परम्परा को बहुत से कलाकारों द्वारा नवीन रूप से संशोधित कर संवारा गया है। ए0 रामचन्द्रन ने भी म्यूरल चित्रों के रूप में भित्ति के समान बहुत विशाल कैनवासों पर तैल माध्यम से चित्रण कार्य किया है। अतः विद्वानों द्वारा उनके इन चित्रों को 'म्यूरल' श्रेणी में रखा गया है। विद्यार्थी जीवन से ही रामचन्द्रन ने भित्ति चित्रण कला में अभूतपूर्व खर्च दिखायी थी, और बाल्यावस्था में केरल के भित्तिचित्रों की स्मृति सदा से रामचन्द्रन के मानसपटल पर अंकित रही। बाद में उन्होंने केरल की भित्ति चित्र परम्परा' पर शोध कार्य के अध्ययन में भित्तिचित्रों से सम्बन्धित बहुत सी विशिष्ट जानकारियाँ प्राप्त की यू ंतो उनके सभी कैनवास भित्तिचित्रण की श्रेणी में रखे जा सकते हैं परन्तु कुछ चित्र आकार में भित्ति जितने विशाल है अतः उन्हें प्रथकतः भित्ति चित्रों की श्रेणी में रखा जाता है।

परन्तु कुछ चित्र आकार में भित्ति जितने विशाल हैं। अतः उन्हें प्रथक भित्तिचित्रों की श्रेणी में रखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त रामचन्द्रन को भित्ति चित्रों की श्रेणी में रखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त रामचन्द्रन को भित्ति पर कार्य करना एक अनूठा अनुभव प्रतीत हुआ। उनके अनुसार भित्ति पर कार्य एक अलग अनुभव रहा। क्योंकि यह भवन निर्माण कला का सम्पूर्ण भाग है। जब कलाकार भित्तिचित्र के विषय पर एक मत कायम करता है। तब उन्हीं शर्तों पर वह निश्चित व उचित स्थान उसे मिल सकता है। इस तरह के कार्य क विचार व दृश्य ईजल चित्र के लिए आवश्यक नहीं है। दूसरे भित्ति चित्रों का सामाजिक रोल या सामाजिक कार्य विशेष है। इससे तात्पर्य है कि यह हजारों दर्शकों द्वारा देखा जाता है यहाँ इसका ध्येय मंदिरों एवं चर्चों की भित्तियों को सजाना है।

रामचन्द्रन द्वारा बनाये भित्तिचित्रों में प्रमुख व प्रथम कृति 1969 का गाँधी दर्शन के लिए बनाया गया भित्तिचित्र है। इस भित्ति चित्र को रामचन्द्रन ने आमन्त्रण (कमीशन) पर बनाया था।

जिसे गाँधी सेन्टनेरी प्रदर्शनी हेतु निर्मित किया गया। यह लकडी पर बना एक वेदी चित्र समान है। रामचन्द्रन की यह कृति गाँधी **(चित्र संख्या 9)** मानव व उसकी हिंसात्मक प्रवृत्ति के दर्शन कराती है। इस कृति में रामचन्द्रन द्वारा गाँधी जी की अहिंसा की तुलना 20 वीं सदी के हिंसात्मक मानव से की गयी है जिसे रामचन्द्रन ने आकृतियों के संयोजन द्वारा वर्णित किया है।

रामचन्द्रन ने विविध कलाओं में भिन्न विषय वस्तु को लेकर चित्रण किया, जिसमें रेखा का पूर्ण योगदान रहा। सर्वप्रथम रामचन्द्रन ने रेखाकंन पर आकृतियों को उकेरा। तत्पश्चात् उनमें रंगों को भरा है। रामचन्द्रन की कृतियों के निर्माण में आकार रेखा (सीमा रेखा) के महत्व को स्पष्टता से देखा जा सकता है। इतना ही नहीं उनके चित्रों में रंगों का अदृश्यत्व बोध होता है। उनके चित्रों में प्रमुख चित्र नृत्यरत कन्याओं की पृष्ठभूमि अंकित है।

रेखात्मक दृष्टिकोण के आधार पर रामचन्द्रन की रेखाओं में जादू है। रेखाओं में जादुई भाव, लय सौन्दर्य का गुण है। रेखाओं में गति एवं शक्ति है। रामचन्द्रन द्वारा बनाये रेखीय व्यक्तिचित्रों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है। जैसे दिव्य दृष्टि द्वारा रामचन्द्रन ने भील, संथाली लाहौर जनजातियों के साथ–साथ जनसाधारण के विविध पहलुओं को भी रेखाओं में बांधा है रूपाकृतियों को रेखीय प्रभाव द्वारा उतारने में रामचन्द्रन ने अविश्वसनीय दक्षता प्रदर्शित की है। रामचन्द्रन ने रेखाकंन का प्रारम्भ संथाली जीवन दर्शन से ही किया था। रामचन्द्रन ने हजारों रेखाकंनों का निर्माण संथाली गाँवों में किया, जिसके परिणाम–स्वरूप वह मानवाकृतियाँ रचने में निपुर्ण हुए रामचन्द्रन द्वारा बनाये गये रूपों में भिन्नता एवं विविधता के कारण ही विभिन्नता एवं विविधता के कारण ही दर्शक चित्र के भाव एवं चित्रित व्यक्तित्व में झाँक पाता है।

रामचन्द्रन के चित्रों पर दृष्टि डालकर देखते हैं, कि उनके चित्रों में विषय की आवश्यकतानुसार तो वर्णों का चयन है ही साथ ही उनके वर्ण मनोवैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न करने में भी पूर्णतः समर्थ हैं। इन्होंने अपने चित्रों में भावों का जो सौन्दर्य प्रस्तुत किया है। वह वर्णों के कुशल प्रयोग द्वारा ही सम्भव है। एक प्रमुख विशेषता जो आधुनिक कलाकार की रही है कि वह मूड के आधार पर भी वर्ण नियोजित करते हैं उस प्रकार से रामचन्द्रन के चित्रों में जीवन का प्रत्येक वर्ण निहित है।

यही कारण है कि रामचन्द्रन के चित्रों के वर्ण कही चटख, कहीं सौन्दर्य तथा कहीं सुकोमल है। आधुनिक कलाकार पूर्णरूप से स्वतन्त्र है वह वर्णों को कितनी भी आभा अपना और भी प्रभाव प्रबल करती प्रतीत होती हे। रामचन्द्रन ने मुख्यतः लाल, नीली, पीली, हरी, सफेद, काली, भूरी, नारंगी, बैंगनी आदि प्रायः सभी रंगतों में कार्य किया है। तथा चित्र छाया–प्रकाश युक्त बनायें हैं। चित्रों में गहरायी दर्शाने के लिये धूमिल वर्णों को शुद्ध वर्णों में मिश्रित कर प्रयोग किया है कहीं –कहीं धूमिल वर्णों का प्रभाव अरूचिकर लगता है, कहीं–कहीं पर अपनी उत्कृष्टता को बनाये रखता है। प्रतिमा विज्ञान में जहाँ धूमिल वर्णों में भी सौन्दर्य विद्यमान है, वहाँ छत में कुरूपता को दर्शाया है। जिनमें एक ही वर्ण की छाया–प्रकाश के बीच की तानें प्रयुक्त की हैं।

प्रारम्भ में, रामचन्द्रन ने एक अभिव्यक्तिवादी शैली में चित्रित किया, जो शहरी जीवन के गुस्से को मार्मिक रूप से दर्शाता है। चित्र बड़े थे, भित्ति चित्रों के समान, और शक्तिशाली आकृति शामिल थे। हालांकि 1980 के दशक तक, रामचन्द्रन के काम में एक बड़ा बदलाव आया। शहरी वास्तविकता अब एक व्यवस्तता नहीं थी। राजस्थान में अपने जीवंत लोकाचार के साथ एक आदिवासी समुदाय ने उनकी कल्पना को जकड़ लिया। साथ ही, केरल के मंदिरों में भित्ती चित्रों के रंग और रूप उनकी अभिव्यक्ति के तरीके को प्रभावित करने लगे। मिथक उसके लिए एक महान संसाधन बन गये। इस नई शैली में पहली 'ययाति' थी, भारतीय महाकाव्य महाभारत की इस कहानी का पुनर्कथन है। इसकी कल्पना केरल के एक मंदिर के आन्तरिक मंदिर के रूप में की गई थी, जिसमें तेरह कांस्य मूर्तियाँ चित्रित भित्ति चित्रों से घिरी हुं थी, कुल आकार में 60 गुणा 8 फीट।

बहुत बड़े पैमाने पर भित्ति चित्रों और लघुचित्रों की अंतरगंता के साथ समान रूप से सहज, रामचन्द्रन ने कमल और स्याही से हजारों चित्र बनाए हैं। इसी तरह, रंगों की पतली धुलाई की कई परतों को जोड़कर उन्होंने जो असंख्य जल–रंग बनाए हैं, वे रंगों की विविधता, रचना की जटिलता और रूपों और छवियों की संवेदनशील प्रस्तुति के संदर्भ में उनके बड़े कैनवस से मेल खाते हैं।

Picture no. 1 Indian Rehabilitation

Picture no. 2 Pratima Vigyan

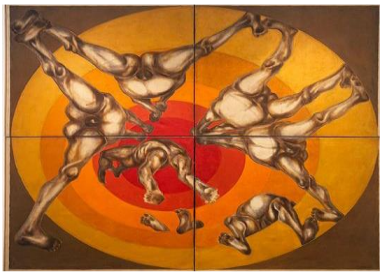

Picture no. 3 Tufan Ceiling

Picture no. 4 Dancing on Amavasya Night

Picture no. 5 two women

Picture no. 6 Lotus on Starry Night

Picture no. 7 Urvashi

Picture no. 8 Urvashi and Ninalore

Picture no. 9 Gandhi philosophy

निष्कर्ष

समय चक्र के परिवर्तन के साथ ही कलाओं में भी परिवर्तन होता देखा जा सकता है। विभिन्न कलाकारों के अर्थ प्रयासों से नवीन शैलियों का जन्म हुआ तथा उन शैलियों में विभिन्न कलाकारों ने अपने अनुसार कार्य किया और उन शैलियों को जीवित रखा। ऐसे कलाकारों में ए0 रामचन्द्रन का उल्लेखनीय है। प्रस्तुत शोध हेतु मैने अभिव्यंजनात्मक दृष्टिकोण अपनाया जिसके निष्कर्ष स्वरूप विभिन्न तथ्य सामने आये जो निम्न बिन्दुओं के रूप में हैं–

दक्षिण केरल के एक छोटे से गाँव अटिंगल के प्राकृतिक वातावरण से प्रेरणा प्राप्त कर जिस कलाकार ने अपनी तूलिका को रंग दिए वह पद्मभूषण प्राप्त कलाकार ए0 रामचन्द्रन है जो आज भी विविध पड़ावों को पार कर नवीन रचना करने में संलग्न है। रामचन्दन के कला जीवन का प्रारम्भ ऐसे समय में हुआ जब हमारा देश स्वतन्त्रता संग्राम से जूझ रहा था, और भारतीय कला का कोई निश्चित स्वरूप नहीं बन पा रहा था। शान्तिनिकेतन से शिक्षा प्राप्त कर रामचन्द्रन ने अपनी कलाभिव्यक्ति प्रारम्भ की और विविध विषयों को स्पष्ट करते हुए निरंतर अपनी तूलिका को सक्रिय करते रहे। रामचन्द्रन ऐसे कलाकार हैं, जो साहित्य के ज्ञाता हैं, प्रतिभा सम्पन्न संगीतज्ञ हैं एवं कुशाग्र चित्रकार भी हैं। उनकी यह संगीतात्मकता उनके चित्रों में प्रस्तुत रूपों को लय प्रदान करने में पूर्णतया समर्थ है कला जगत का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र, शैली या तकनीक हो। जिसमें राचन्द्रन ने अपना सहयोग ना दिया हो। इनके बाल्यकाल के विविध अनुभव, इनका व्यक्तित्व, प्राकृतिक वातावरण आदि निरंतर इनकी तूलिका को प्रेरणा देते रहे और इन्हीं संवेदनाओं को रामचन्द्रन पट पर साकार करते रहे।

उनके इस कलात्मक कार्यकलापों की विषयवस्तु मुख्य रूप से समाज, प्रकृति, कला परम्परा आदि पर आधारित रही। जहाँ समाज के प्रतिबिम्ब को उनके प्रारम्भिक चित्रों और एचिंग में देखा जा सकता है। वहीं भित्तिचित्रों एवं लघुचित्रों में पारम्परिक कला के स्पष्ट दर्शन होते हैं। रामचन्द्रन ने साधारण जनसामान्य एवं पीड़ितों को अपनी कलाकृतियों में स्थान दिया। भारतीय पुर्नवास, कब्र खोदने वाले जैसी प्रसिद्ध कलाकृतियाँ रामचन्द्रन की कला को एक नवीन दिशा प्रदान करती हैं। गरीबों की व्यथाओं और दुःखों को रामचन्द्रन ने चित्र भाषा के साथ–साथ अपनी लेखनी द्वारा भी शब्दों में ढाला। रामचन्द्रन प्रकृति की भी आत्मीय पहचान रखते हैं अत्यधिक कुशलता से इन्होंने गम्भीर विषयों, सरोवरों, पशु–पक्षियों, पेड–पौधों, आकाश आदि का चित्रण किया। सभी विषयों को प्रतिध्वनित करने में रामचन्द्रन को निरंतर एक आनन्द की अनुभूति होती रही है। इसका परिणाम यह भी हुआ कि कहीं–कहीं चयनित विषयों से आन्तरिक लगाव के कारण पुनर्रावृत्ति भी मिलती है विशेष रूप से श्रृंखला चित्रों में कमलपुष्पों से तो वह बहुत गहरे स्तर पर जुड़े हैं। इतना ही नहीं कीटों सरीखी सूक्ष्म आकृतियों को रामचन्द्रन ने अपनी कृतियों में स्थान दिया। जिसमें उन्होंने स्वयं को भी चरितार्थ किया।

सन्दर्भ

1. सिंह मदन, भारतीय कला भाग–1, राठौर, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर पृष्ठ संख्या–7
2. भारद्वाज विनोद, वृहद आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–88
3. प्रताप रीता, भारतीय चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकैडमी जयपुर पृष्ठ संख्या–358
4. Maqbool, by Akhilesh Rajkamal Prakashan new Delhi, Page No-16
5. जोशी ज्योतिष, भारतीय कला के हस्ताक्षर, प्रकाशन विभाग प्रसारण एवं सूचना मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ संख्या–30
6. अग्रवाल जी0 के0, आधुनिक भारतीय कला संजय पब्लिकेशंस आगरा, पृष्ठ संख्या–149
7. Afnam David, World of Art Thames and Hudson. Pag No-7
8. guru Aastha, Modern Indian Art. Pag. No.-12
9. भारद्वाज विनोद, बृहद आधुनिक कला कोश वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–133
10. रामचन्द्रन ए0, रॉबिन करोदे पब्लिश्ड बडेरा आर्ट गैलरी 2012 पृष्ठ संख्या–11
11. भारद्वाज विनोद, समकालीन कला ललित कला अकैडमी का प्रकाशन 2002 अंक 22, पृष्ठ संख्या–123
12. Adobe of gods neural radiations of Kerala Pramod Chandra published by vadera art gallery, Page No,-12
13. भारद्वाज विनोद, वृहद आधुनिक कला कोश, वीणा प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–159
14. सिंह विक्रम, भारतीय समकालीन कला, पृष्ठ संख्या–26
15. https://www.art of ramachandran.com